अनुक्रमणिका

- **राजस्थानी होरी साहित्य** ... **1-25**

होरी से अभिप्राय ... 1

होरी साहित्य का वर्गीकरण परक अध्ययन ... 6

वर्ण्य विषय के आधार पर

I. भक्ति भावपरक होरियाँ ... 6

II. पौराणिक देवी-देवताओं की होरियाँ ... 8

III. लोक-देवी देवताओं की होरियाँ ... 9

IV. ऐतिहासिक घटनाओं एवं इतिहास प्रसिद्ध चरित्रों की होरियाँ ... 10

V. शृगांरादि विषयों तथा होली से सम्बन्धित होरियाँ ... 11

VI. अन्य विषयों से सम्बन्धित होरियाँ ... 12

रस के आधार पर होरियों का वर्गीकरण

1. वीर रसात्मक होरियाँ ... 13

2. शृंगार रस प्रधान होरियाँ ... 14

3. भक्ति रस प्रधान होरियाँ ... 14

4. करुण रस प्रधान होरियाँ ... 15

5. हास्य रस प्रधान होरियाँ ... 16

6. शांत रसात्मक होरियाँ ... 16

क्षेत्र व बोली के आधार पर होरियों का वर्गीकरण ... 16

1. मारवाड़ अंचल के होरी गीत ... 17

2. शेखावाटी अंचल के होरी गीत ... 18

3. ब्रजमण्डल के होरी गीत ... 20

4. मालवा अंचल के होरी गीत ... 22

5. मेवाड़ अंचल के होरी गीत ... 24

- **राजस्थानी होरी साहित्य का मूल्यांकन** ... **26-55**

राजस्थानी होरी साहित्य में संस्कृति निरूपण ... 26

1. वचन निर्वाह ... 26

2. उदात्त जीवन व मूल्य ... 27

3. बैर लेने की परम्परा ... 28
4. गो, ब्राह्मण, स्त्री, असहाय की रक्षा वीरों का प्रथम कर्तव्य ... 29
5. राष्ट्र रक्षा का भाव कण-कण में व्याप्त ... 29
6. मरण मंगल पर्व पर केसरिया करना ... 31
7. हर्षोल्लास के अवसरों पर अफीम गलाना व मदिरापान ... 32
8. राजस्थान के विशिष्ट संस्कारों का वर्णन ... 33
   क. ढूंढ संस्कार ... 33
   ख. झडूला (मुण्डन) संस्कार ... 33
   ग. विवाह से सम्बन्धित रस्में-चूड़ा चिराना, पडळा लाना ... 34
   घ. तोरण वंदना ... 34
9. पौराणिक देवी-देवताओं व लोक-देवी-देवताओं का इष्ट ... 35
10. जनसाधारण का प्रत्येक स्वर उल्लास व उत्साह से ओतप्रोत ... 36

राजस्थानी होरी साहित्य में ऐतिहासिक संदर्भ ... 36

राजस्थानी होरी गायकी व नृत्य ... 43

होरी का गायन लोक-गीतों से भिन्न ... 45

जोधपुर के बिलाड़ा क्षेत्र की विशिष्ट होरी गायकी ... 45

1. मारवाड़ का गै'र नृत्य ... 46
2. शेखावाटी का ढप व गींदड़ नृत्य ... 50
3. मेवात का बमरसिया नृत्य ... 51

होरी गायन के साथ प्रमुख रूप से प्रयुक्त होने वाला वाद्य-चंग तथा उसका वादन ... 52

होरियों के बीच प्रयुक्त होने वाले 'दूहे' (दोहे) ... 54

- **राजस्थानी होरी साहित्य का भाव-पक्ष** ... **56-71**
  1. शृंगार रस ... 58
  2. भक्ति रस ... 61
  3. शांत रस ... 64
  4. वीर रस ... 66
  5. रौद्र रस ... 68
  6. करुण रस ... 69

- **राजस्थानी होरी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना** ... **72-102**

होरी साहित्य में व्यंग्य ... 78

राजस्थानी होरी साहित्य का संदेश ... 87

1. मातृभूमि, धर्म व संस्कृति के प्रतिपालकों का सम्मान ... 87

2. विकट परिस्थितियों में भी हार न मानना तथा दृढ़ आस्थावान रहते हुए संघर्ष करना ... 92
3. परलोक के झमेले को छोड़कर इस संसार को ही स्वर्ग बनायें... 93
4. जीव मात्र के प्रति दया व कल्याण की भावना ... 93
5. संतोषप्रद, सुखी जीवन व सौहार्दपूर्ण समाज का निर्माण ... 94
6. भ्रातृत्व प्रेम का पुनीत संदेश ... 96
7. गो-रक्षा ... 97
8. यश की अमर आकांक्षा ... 98
9. नीति, सदाचार, धर्म की पालना से ही सुखी जीवन संभव ... 98
10. व्यसन व शोषण से मुक्ति ... 99
11. प्रेम ही जीवन है ... 100

• **राजस्थानी लूर साहित्य : परिचय प्रकार** ... **103-129**
लूर से तात्पर्य ... 103
राजस्थान में लूरों का मुख्य क्षेत्र ... 111
लूरों का वर्गीकरण ... 111
1. रूढ़ विश्वासों से सम्बन्धित लूरें ... 112
2. ससुराल पक्ष में संयुक्त परिवार के अस्तित्व पर प्रतिक्रिया से सम्बन्धित लूरें ... 112
3. पीहर पक्ष में माता-पिता, भाई से सम्बन्धित लूरें ... 114
4. नारी मन के अंतर्मन से सम्बन्धित लूरें ... 116
5. नारी की वेदना, शोषण, प्रताड़ना के स्वरों में भीनी लूरें ... 117
6. शृंगार सम्बन्धी लूरें ... 118
7. प्रेम व काम भावनाओं के उद्दाम रूप को प्रकट करने वाली लूरें 119
8. अन्य 122
लूर का प्रतिपाद्य ... 128

• **लूरों का साहित्यिक मूल्यांकन** ... **130-161**
लूरों का कला पक्ष ... 133
छन्द ... 135
अलंकार ... 136
लूरों का भाषा-सौष्ठव ... 139
लूरों की भाषा में गेय शैली से सम्बन्धित सामान्य प्रवृत्तियां एवं रूढ़ियां 141
लूरों की काव्यात्मक शैली ... 143
विवरणात्मक शैली ... 143

विवेचनात्मक शैली	...	144
लूरों का संवाद-सौष्ठव	...	144
लूरों का भाव पक्ष	...	146
लूरों में विरहानुभूति	...	157
1. प्रियजन की श्रेष्ठता	...	157
2. संदेश प्रेषणीयता	...	157
3. सात्विकता	...	158
4. अन्तर्वृत्तियों की बहुलता	...	159
5. विरह में अश्रुपात	...	159
6. ऋतु, त्यौहार व उत्सव उद्दीपन के रूप में	...	160
7. प्रियजन की निष्ठुरता	...	160
8. उपालम्भ व व्यंग्योक्तियाँ	...	161
लूरों में निरूपित प्रादेशिक संस्कृति	...	161
मेले व त्यौहारों की विशिष्ट रंगत	...	164
लूर गायन की समाज में मान्यता व प्रतिक्रिया	...	164
हमारी दोषपूर्ण सामाजिक व्यवस्था, रूढ़ मान्यताओं पर लूरों का कटाक्ष	...	165
नारी की सबसे बड़ी शत्रु-सौत	...	168
लूरों में अति यथार्थ	...	169
होरी एवं लूर साहित्य में जनचेतना	...	171
• **होरी एवं लूर साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन**	...	**175-180**
• **सहायक ग्रन्थ सूची**	...	**181-186**